जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 99
जून, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

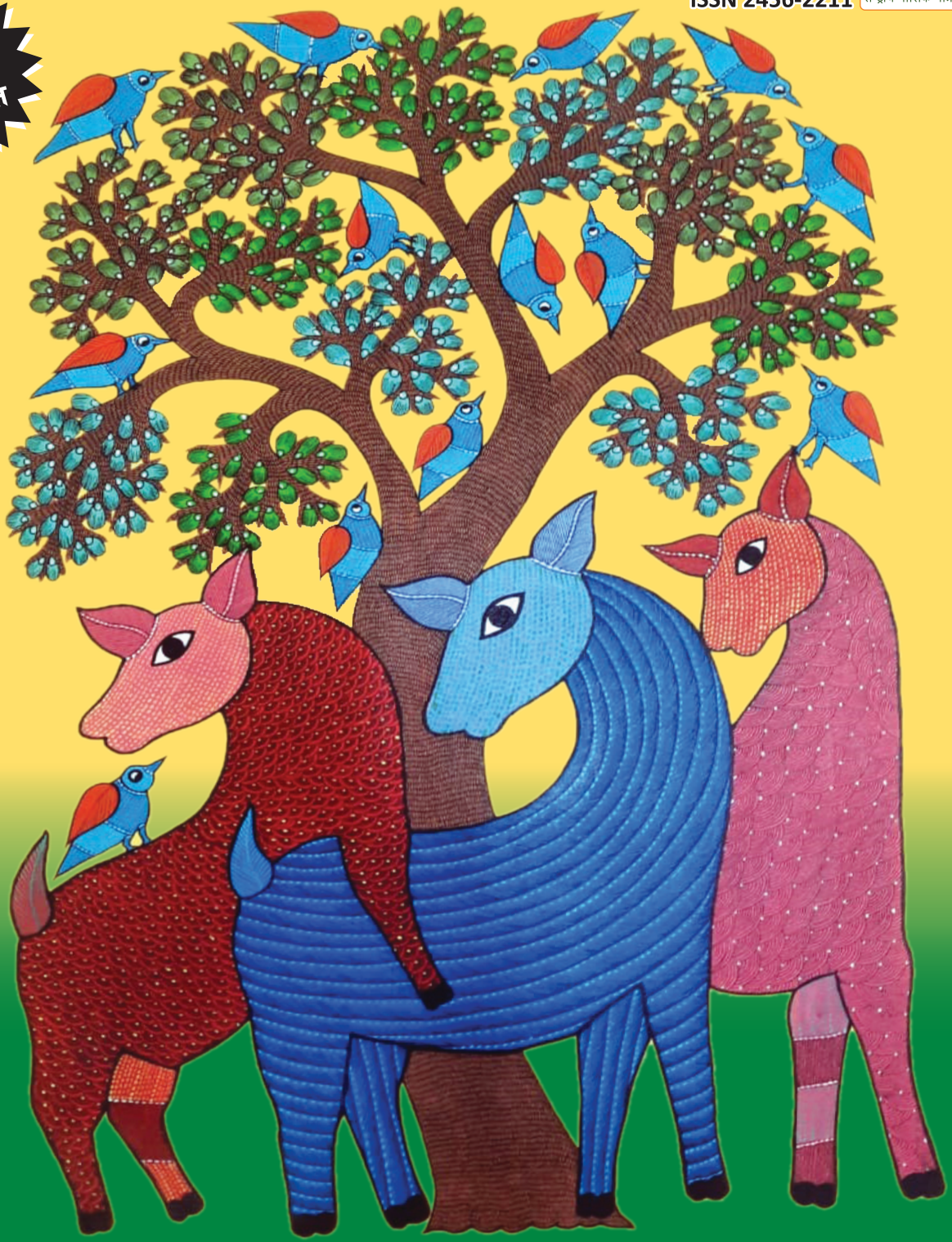

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जून 2024 **वर्ष-10 • अंक-99**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

5. गोंड पेंटिंग के लिए प्रकृति ही हमारा कैनवास है
(उभरती हुई गोंड कलाकार **अनीता श्याम** और **विजय कुमार श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

8. साहित्य-कर्म और 'राष्ट्रीय स्व' की अवधारणा : **डॉ. कमल किशोर गोयनका**

13. जनजाति क्या है? एक परिदृश्य : **ए.आर.एन श्रीवास्तव**

17. नट समाज द्वारा आँखों का अंजन... : **कमला नरवरिया**

20. गोंड राज्य की वास्तुकला : **डॉ. सुरेश मिश्र**

24. साहित्य का मामला : **गाओ जिंगजियान**, अनुवाद -**शंकर शरण**

27. कुमार गंधर्व जन्म शताब्दी : **शैलेन्द्र चौहान**

29. अवधी काव्य के साहित्यकार, चन्द्र भूषण त्रिवेदी उर्फ 'रमई काका' : **चित्र लेखा वर्मा**

कहानी

31. एक सफर ऐसा भी : **डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव**

34. दुर्घटना : **सुषमा मुनीन्द्र**

शहर की कथा

38. दिल्ली जो कभी थी : **अरविंद 'कुमारसंभव'**

कविता/शेर

40. राजकुमार कुम्भज 40. अलका 'सोनी' 41. घनश्याम कुमार 41. सुचिता किरण भगत 42. ओमप्रकाश यती 43. प्रवीण पारीक 'अंशु'

व्यंग्य

45. कृपया टैग ना करें... : **विनोद कुमार विक्की**

26. **कहावतें**

44. **यादें**

लोक प्रथा

47. मुरिया जनजाति बाँस की टोकरी का पालना बनाती है : **टी. अपाला नायडू**

पुस्तक समीक्षा

46. हिंदी कहानी और भूमंडलीकरण : **कुसुमलता सिंह**

16. **क्या है ककसाड़?**

48. **पत्र**

49. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - अनीता श्याम और **विजय कुमार श्याम** (गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 93995-88573

संपादकीय

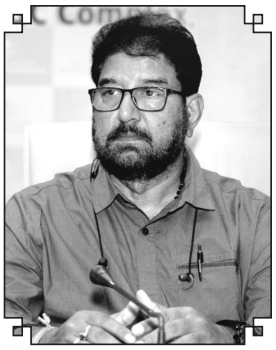

जून महीने का ककसाड़ आपके हाथों में है। यूँ तो हर दिन, हर महीना, हर साल अपने अलग-अलग विशिष्ट कारणों से महत्वपूर्ण से होता है, किंतु जून महीने की बात ही कुछ खास है। सबसे पहले तो यह बता दूँ कि इस महीने में विभिन्न जरूरी विषयों पर केंद्रित 56 महत्वपूर्ण विश्व दिवस अथवा वैश्विक महापर्व पर्व मनाए जाने हैं। यानि कि हर दिन लगभग दो-दो विश्व दिवस या महापर्व।

जून के बस पहले हफ्ते की बानगी पेश है :- 1 जून-वैश्विक माता-पिता दिवस तथा 1 जून को ही विश्व दुग्ध दिवस, 2 जून को अंतराष्ट्रीय सेक्स वर्कर्स दिवस तथा 3 जून को विश्व साइकिल दिवस तथा 4 जून को आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतराष्ट्रीय दिवस। 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस है और 7-जून विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस।

सवाल उठता है कि, हर साल इतने पर्व मनाने के बावजूद क्या इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर हम 1 इंच भी आगे बढ़ पाए हैं? वैश्विक माता-पिता दिवस तो हम हर साल मानते हैं परंतु दिनों दिन बुजुर्ग माता पिताओं की हालत बेहद खराब होते जा रही है। आजकल न्यूक्लियर फैमिली और लिव-इन के इस युग में बूढ़े, सठियाए माता-पिता के लिए कहीं कोई जगह खाली नहीं है। साल दर साल दिवस मनाने के बावजूद मासूम बच्चों के खिलाफ बढ़ रही अमानवीय दरिंदगी कम नहीं हो रही है, बल्कि यह पागलपन बढ़ता जा रहा है।

सालों साल 5 जून को पर्यावरण दिवस की रटी रटाई औपचारिकता पूर्ण करने के बावजूद, सरकारों तथा नेता गणों के द्वारा करोड़ों अरबों पेड़ लगाए जाने के खोखले दावों को मुँह चिढ़ाते क्लाइमेट चेंज, ग्लोबल वार्मिंग का खतरा सुरसा की तरह मुँह की तरह दिन प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। कहीं गर्मी का पारा थर्मामीटर तोड़ कर छलक रहा है तो कहीं रेगिस्तान में सदियों बाद हुई ताबड़तोड़ बारिश में सैकड़ों लोग बहे चले जा रहे हैं। इधर 7-सात जून को हम कई सालों से विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस भी नियमित रूप से मनाते चले आ रहे हैं, वहीं करोड़ों लोगों को 2 जून की रोटी के लाले पड़े हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में रोजाना करीब 80 करोड़ लोग रोज भूखे सोने को मजबूर हैं, जबकि 1 अरब लोगों का खाना रोजाना बर्बाद होता है। गजब विरोधाभास है कि, जहाँ एक ओर दुनिया में करोड़ों लोग भोजन को तरस रहे हैं, वहीं उसी दुनिया में हर आदमी औसतन 79 किलोग्राम अनाज हर साल बर्बाद कर रहा है।

चलिए रास रंग उछाह विहीन इन दिखावटी महापर्वों की दिखावटी दुनिया से बाहर निकला जाए। और एक बार फिर हम चलते हैं अपने आदम पुरखों यानी जनजातीय समुदायों की असली दुनिया की ओर। और अगर देश के सबसे प्राचीन जनजातीय समुदायों की बात चले, तो फिर बस्तर को निःसंकोच उनकी राजधानी कहा जा सकता है। जहाँ देश का अधिकांश हिस्सा जून में हाय गर्मी, हाय गर्मी का मंत्र जाप कर रहा है वहीं बस्तर के जंगलों के स्थानीय प्रभाव से एवं मानसून के हरावल दस्ते की बारिश की फुहारों से तर-बतर बस्तर की आबो-हवा तथा नजारे बिल्कुल अलग है। बस्तर की पहाड़ियाँ हरियाली की चादर ओढ़ कोलंबियाई पन्ने की तरह दमकने लगी हैं। ज्यादातर गर्मी दुम दबाकर कंक्रीट के जंगलों की ओर भाग खड़ी हुई है, और बची-खुची गर्मी नकचढ़े नये अमीरों के सिर चढ़ गई है। बस्तर में यह महीना जनजातीय समुदायों में शादियों का भी होता है। दरअसल मुख्य रूप से वनोपज की आमदनी पर निर्भर रहने वाले इस समुदाय के ज्यादातर वनोपजों के संग्रहण तथा उसके पैसे मिलने का समय भी यही होता है। सो बचे खुचे मेला, मंड़ई, यात्रा भी इसी महीने में संपन्न कर दिए जाते हैं, क्योंकि मानसून आगमन के साथ ही आने वाला समय पूरी तरह से खेती-बाड़ी के काम में डूब जाने का होता है। और हाँ इसी महीने बस्तर के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक 'गोंचा-पर्व' की औपचारिक शुरुआत भी हो जाती है। अब यह न पूछ लीजिएगा कि ये 'गोंचा' क्या है? वैसे तो गोंचा का एक बहुप्रचलित मतलब उस मुख्य पोशाक से है जो लद्दाख के लगभग सभी समुदायों के स्त्री पुरुष दोनों द्वारा पहनी जाती है। पर हमारे बस्तर में गोंचा के मायने बिल्कुल ही अलग है। यह तो बस्तर का 27 दिनों तक चलने वाला एक महा-पर्व है, जिसकी तैयारी प्रायः जून में शुरू हो जाती है और यह जुलाई तक चलता है।

इसके लिए जनजातीय समुदायों के चयनित गाँव-कुनबे के लोग कठोर परिश्रम करके बिना किसी आधुनिक यंत्र का उपयोग किये, अपने हाथों से 25 फीट ऊँचा लकड़ी का रथ बनाते हैं। बस्तर गोंचा पर्व में भी सैकड़ो सालों से जगन्नाथ पुरी की तरह ही पूरे उत्साह के साथ मनाई जाती है। इस पर्व का 10 दिवसीय मुख्य-समारोह जगदलपुर शहर में संपन्न होता है। बस्तर के रथयात्रा पर्व में एक अलग परंपरा व संस्कृति देखने को मिलती है। हजारों साल पुरानी तकनीक से बने लकड़ी के विशालकाय रथों को फूलों तथा रंग बिरंगे कपड़ों से सजाया जाता है। इस रथ को हजारों आदिवासी समुदाय के साथ स्थानीय लोग भी खींचते हैं। माना जाता है कि रियासतकाल मे बस्तर रियासत के तत्कालीन राजा ने जमीन पर साष्टांग दंडवत करते हुए बस्तर से जगन्नाथ पुरी मंदिर तक की यात्रा की थी। तत्पश्चात सपने में जगन्नाथ भगवान से मिले निर्देश के अनुसार ओड़िसा व जगन्नाथ पूरी के महाराजा ने बस्तर के राजा को रथपति की उपाधि दी थी। जिसके बाद ओड़िसा के बाद बस्तर में गोंचा पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। बस्तर के राजा को स्थानीय जनजातीय समुदाय बेहद प्यार करता था, इसलिए इस राजकीय पर्व को जनजाति समुदायों ने अपना महा लोकपर्व बना लिया। इसके रीति रिवाज भी इन्होंने अपने परंपराओं के अनुरूप गढ़े। दुर्गम बस्तर के गाँव से जगदलपुर शहर आए हजारों जनजातीय समुदाय के लोगों द्वारा खींचे जा रहे तीन विशालकाय रंग बिरंगे खूबसूरत रथों पर सवार भगवान जगन्नाथ,बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र की भव्य रथयात्रा का आँखों में न समा पाने वाला यह भव्य नजारा अद्‌भुत होता है। जगन्नाथ पुरी की रथ-यात्रा के बाद देश में सबसे बड़ी रथ-यात्रा बस्तर के गोंचा पर्व की मानी जाती है। बस्तर के गोंचा पर्व की एक और अनूठी परंपरा है जो पूरे विश्व में इकलौती है। इस त्योहार में बाँस के बने शुरूआती राइफलनुमा एक डेढ़ फुट के यंत्र 'तुपकी' में जंगलों में इसी मौसम में पाए जाने वाले एक बहुवर्षीय लता के छोटे-छोटे गोल फलों को गोली की तरह डालकर परस्पर एक दूसरे पर दागा जाता है। इसमें जोरदार गोली की तरह ही आवाज होती है, और इससे बहुत ही हल्की सी अस्थाई चोट लगती है और वह जगह की त्वचा बस लाल हो जाती है, जिसे लोग हँसते-हँसते बड़े आराम से सह लेते हैं, यह सिलसिला सुबह से शुरू होकर देर शाम तक चलता है। इस गोल फल में कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं, माना जाता है कि इसके कारण साल भर गठिया बात तथा अपने कई बीमारियों से बचाव होता है। इसलिए इस गजब गोली की मार खाकर भी व्यक्ति गोली मारने वाले को मन से धन्यवाद ही देता है। प्रेमी प्रेमिका साल भर इस पर्व का इंतजार करते हैं और अपनी तुपकी को चिड़ियों की रंग-बिरंगे पंखों से,मयूर पंख से, ताड़ के पत्तों से या कागज से सजाते हैं। गोंचा पर्व पर प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे पर मन भर गोलियों की बरसात करते हैं। वैसे तो इसकी चोट बस कुछ मिनट में ही खत्म हो जाती है। परंतु प्रेमियों के दिल पर लगी इस प्यार पगी चोट की कसक साल भर, अगले गोंचा पर्व तक बनी रहती है। तुपकी युद्ध के बाद लोग परस्पर नृत्य गान में भाग लेते हैं पहले एक दूसरे को चिवड़ा, गुड़, केला तथा वस्त्र में लुंगी का उपहार दिया जाता था अब आधुनिक मिठाई व वस्त्र आदि देते हैं। इस दिन परस्पर एक दूसरे को भगवान जगन्नाथ का 'महाप्रसाद' खिलाकर लोग आजीवन मित्रता के बंधन में बंध जाते थे। यह पूरी जिंदगी परस्पर एक दूसरे का नाम नहीं लेते, एक दूसरे को महाप्रसाद से ही संबोधित करते हैं। यह रिश्ता खून के रिश्ते से भी ज्यादा महत्वपूर्ण एवं पवित्र माना जाता है। ऐसे ही विश्व का हर जनजातीय समुदाय अपने आप में अनोखी परंपराएं संजोए हुए अद्वितीय है। वर्तमान विकसित कहे जाने वाले समाज तथा इन लुप्त हो रही सभ्यताओं के बीच एक सुदृढ़ कड़ी के निर्माण में विगत एक दशक से अनथक जुटी है आपकी प्रिय पत्रिका ककसाड़ ! हम अपने इन प्रयत्नों में कितने सफल हो पा रहे हैं तथा इसमें और क्या बेहतर किया जा सकता है यह सब जानने समझने के लिए हमें आपके पत्रों संदेशों और सुझावों का सदैव इंतजार रहता है। इसलिए कृपया आप भी कलम अथवा मोबाइल जो भी आपके लिए सुविधाजनक हो उठाएं और शुरू हो जाएँ।

इसी के साथ अगले अंक तक के लिए विदा।

आपका

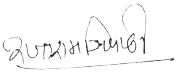

डॉ. राजाराम त्रिपाठी

मो. 94252-58105